श्री साँईं व्रत कथा

(बृहस्पतिवार व्रत कथा)

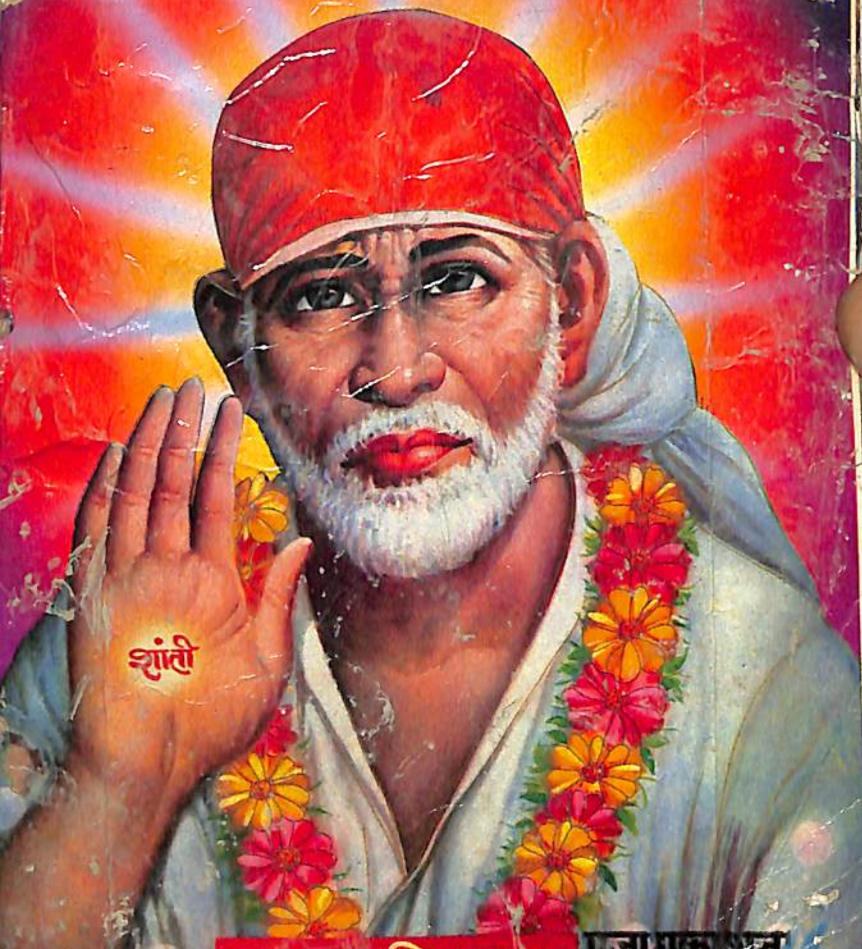

पूजा प्रकाशन

भारत मे सर्व प्रथम सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित कथा.

श्री सांई बाबा

व्रत कथा

(वृहस्पतिवार व्रत कथा)

जो लोग सच्चे एवं शुद्ध हृदय से हर रोज सांई बाबा की कथा करेंगे उनकी हर मनोकामना पूरी होंगी और सारे कष्ट दूर हो जाऐगें।

लेखकः-

पं0 नरेन्द्र पाठक

प्रकाशकः-

पूजा प्रकाशन

(सदर स्टेशन के बराबर में मस्जिद के बाहर)

पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

फोन :- दुकान : ☎ 3625241, 3626450

मूल्य 8/-रुपये

प्रकाशकः-

पूजा प्रकाशन

(सदर स्टेशन के बराबर में मस्जिद के बाहर)
पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित है।

पूजन सामग्री

गुलाब, चमेली, मोतिया के ताजा फूल अग्रबत्तियां, धूप, फल एवं नारियल की कच्ची गरी के टुकड़े

प्रमुख विक्रेता:-

गर्ग कम्पनी बुकसेलर

पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

कम्पोजरः-एस. एस. ग्राफिक्स
9319, टोकरी वालान, पुल मिठाई दिल्ली-110 006
फोन : 7772517 पी0पी0

श्री साईं बाबा व्रत कथा

(वृहस्पतिवार व्रत कथा)

भगवान श्रीकृष्ण ने पवित्र गीता के अध्याय 8 में कहा है कि जो प्राणी अपने जीवन के अंतिम क्षणों में मुझे याद करते हैं वे मुझे प्राप्त होते है, उस समय वे जो कुछ भी दृश्य देखते हैं, जैसी भी कल्पना करते हैं, वही सब पा लेते हैं।

ऐसे ही हमारे सांई बाबा थे, जो पृथ्वी पर उस समय, अवतार धारण कर के आये जब चारों ओर पाप की काली छाया फैली हुई थी लोग दुःखों और निराशा के सागर में डूबते हुए जोर जोर से चिल्ला रहे थे-हमें बचाओ. . .हमें बचाओ . . .यह फरियाद ईश्वर के घर में पहुंची तो वही से मानव जाति के कल्याण के आदेश हुए। मुक्ति के लिए किसी अवतार की आवश्यकता है। उसी समय कुल देवता श्री नारायण, आदि नाथ की कृपा से, कोंकण में इस युग पुरुष ने अवतार धारण

पूजा प्रकाशन, पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

किया जो प्रभु का ही दूसरा रूप थे कोकंण वही पवित्र भूमि है जिसे भगवान परशुराम ने सागर से निकाल कर स्थापित किया था।

आज उसी सांई बाबा की यह कथा आरंभ करते हुए सब देवगणों, ऋषियों, मुनियों के साथ साथ प्रभु को सौ-सौ बार प्रणाम करता हूं जिन्होंने हमारे सांई बाबा को अवतार धारण करवा कर दीन दुखियों के कल्याण के लिए धरती पर भेजा।

अध्याय 1

अमीर शक्कर

शिरडी की इस पवित्र धरती पर सांई बाबा के दर्शनों के लिए आने वाले लोगों में अमीर गरीब सब एक साथ चले आते हैं, उन्हें खींच कर लाने वाली एक मात्र शक्ति है सांई बाबा। जो प्रभु का अवतार माने जाते हैं, उन की शक्ति परीक्षा के लिए जब अमीर शक्कर वहां पर आए।

गठिया रोग से पीडित शक्कर खां जब अपने इस भयंकर रोग का इलाज बडे-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों से करवा कर थक गए और निराशा के सागर में डूबे अपने भाग्य को पीट रहे थे उनके मुख से बार बार यही निकल रहा था—या खुदा अब तो मुझे उठा ले। मैं इस दुनिया में जी कर क्या करुँगा? "मेरा शरीर ही नाकारा हो गया है।" मैं न तो चल सकता हूं न उठ सकता हूं न बैठ सकता हूं यही नही मैं तो इतना मजबूर हो गया हूं मेरे खुदा कि मैं तुम्हारी उपासना करने से भी मजबूर हो गया हूँ। यह सब कुछ कहते हुए अमीर शक्कर बच्चों की तरह रोने लगता था एक दिन अमीर शक्कर के दोस्त उसके घर आए तो उन्होंने अमीर शक्कर को रोते देखा तो वह झट से बोले "अरे भाई, इतना निराश क्यों होते हो चलो शिरड़ी सांई बाबा की शरण में वहां जाते ही तुम्हारा रोग ठीक हो जाएगा।

अमीर शक्कर ने आश्चर्य से अपने मित्र की ओर देखा जैसे उन्हें विश्वास न हो रहा हो क्योंकि उन्होंने

तो बड़े से बड़े डाक्टरों से भी इसका इलाज करवा कर देख लिया था, भला सांई बाबा कौन से डाक्टर हैं।

अमीर शक्कर का दोस्त समझ गया था कि उसे विश्वास नही हो रहा, इस लिए उसने दोबारा से उसे कहा।

भैया अमीर संदेह और शंका को मन से निकाल दो और मेरी बातों को याद रखो जो भी सच्चे मन से श्रद्धा और भक्ति की भावना से बाबा की शरण में चला जाता है वह कभी निराश नहीं आता, बाबा के दरबार में हर चीज मिलती है।

अमीर शक्कर ने सोचा यदि वह मौत को गले लगाने की लिए तैयार है तो बाबा की शरण में जाने में क्या हरज है।

बस यही सब सोच कर अमीर शक्कर बाबा की शरण में चलने के लिए तैयार हो गया। शिरड़ी भले ही एक छोटा सा गाँव था मगर बाबा के पास आने वाले

हजारों भक्तों की लम्बी लाईन वहां पर लगी रहती थी। सब लोग सांई बाबा के भजन गाते हुए झूमते नाचते उनके दरबार तक जा पहुंचते थे। बाबा मस्जिद के अंदर ऊंचे चबूतरे पर बैठें बड़े धैर्य से अपने भक्तों को दर्शन दे रहे थे। हर दुःखी का दुःख भी सुनते थे कोई उनके दरबार से खाली नहीं लौटता था।

अमीर शक्कर रोता हुआ बाबा के चरणों मे जा गिरा और रो-रो कर कहने लगा, मुझे बचा लो बाबा मैं बहुत दुखी हूं।

प्रभु पर भरोसा रखो अमीर, रोने से दुःख दूर नहीं होते, जाओ हमारी बावडी जा कर रहने लगो। हम तुम्हारा दुःख दूर कर देंगे। बाबा ने बडे प्यार से अमीर की पीठ पर हाथ फेरा, अमीर को बाबा का हाथ अपने शरीर पर फिरते देख कर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसके शरीर की जलन समाप्त हो रही हो उसका कष्ट कम हो रहा हो।

उसी दिन से अमीर बाबा के आश्रम में रहने लगा। बाबा हर रोज सब रोगियों की पीठ पर हाथ फेरते और उन्हें यही कहते चिंता न करो, तुम बहुत जल्द ठीक हो जाओगे।

अमीर शक्कर भी उन रोगियों के साथ रहने लगा मगर उसे बार बार यह महसूस हो रहा था कि वह इतना धनी होते हुए कहां इन सब के बीच में फंस गया है।

परन्तु नौ मास तक ऐसे ही सोचता रहा। बाबा की कृपा से पहले से काफी ठीक हो गया। मगर उसके मन में बार बार यही शंका उभर रही थी कि वह इन सब घटिया लोगों में आकर फंस गया है एक रात अमीर शक्कर के मन मे यह विचार आया कि वह क्यों ना चोरी से इस आश्रम से भाग जाए।

बस फिर क्या था मौका मिलते ही रात को वह वहां से भाग खड़ा हुआ और साथ के कीपर गांव की धर्मशाला में जाकर ठहरा। वहां पर उसने एक ऐसे फकीर को तड़पते देखा जो जमीन पर लेटा चिल्ला रहा

था, पानी-पानी अमीर ने भागकर उसके मुंह में पानी डाला मगर जैसे ही उसके मुंह में पानी डाला तो उस फकीर ने उसकी गोद में ही दम तोड़ दिया उसे अपनी गोद में मरते देख कर अमीर घबरा गया उसे पता था इस फकीर के खून का इल्जाम उसी के सिर पर लगेगा। पुलिस उसे पकड लेगी- फांसी से कम सजा नहीं होगी। फांसी-फांसी। इस कल्पना से ही अमीर का शरीर कांप उठा। दूसरे ही क्षण उसे अपनी भूल का अहसास हुआ, सांई बाबा के आश्रम से चोरी से भाग कर उसने जो अपराध किया था उसी अपराध की सजा उसे मिल रही है। फांसी. .फांसी।

नहीं-नहीं बाबा मुझे क्षमा कर दो, मैंने भूल की है, इस भूल की सजा मौत तो न दें इसमें मेरा दोष ही क्या है, मैंने तो अपनी ओर से भला करने की कोशिश की थी। अमीर धरती पर गिर कर सांई बाबा से क्षमा मांगने लगा तो दूर आकाश से उसे आवाज सुनाई दी, अमीर तूने जो पाप किया था उसी की सजा तुम्हें मिल

रही है, तू फिर से हमारी शरण में आजा तुम्हारे सारे दुःख दूर हो जाएं।

अमीर उसी समय उठा और तेजी से दौड़ता हुआ शिरड़ी की ओर चल पड़ा। जाते ही बाबा के चरणों में गिर कर उन से माफी मांगने लगा बाबा ने बड़े प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, अमीर तुमने जो भी भूल की उसका पश्चाताप ही सब से बड़ी माफी है, जाओ अपने स्थान पर जा कर फिर से रहने लगो।

आप धन्य हैं प्रभु आप महान हैं, आपने मुझे क्षमा करके मुझे शांति दी है, प्रभु शांति।

बस कुछ ही दिनों के पश्चात रोग मुक्त हो कर अमीर अपने घर वापस चला गया और वह हर समय बाबा की उपासना करने लगा।

दूसरा अध्याय

एक बार बाबा जी के आश्रम में रामायण का पाठ चल रहा था। सब भक्त जन राम जी की लीला

के अंदर खोए हुए थे, विशेष रूप से जब हनुमान जी ने अपनी माता के आदेशानुसार श्री राम की महानता की परीक्षा ली उस प्रसंग को सुनते हुए सारे भक्त जन अपने आपको भूल गए थे।

यह भी एक विचित्र बात ही थी कि बाबाजी के परम भक्त हेमांड पंत के कंधे पर एक बिच्छू चढ़ आया बिच्छू . . . बिच्छू. . . बिच्छू का नाम सुनते ही हर इन्सान के चेहरे का रंग उड़ने लगता है, यही हाल उस समय पंत जी का था, परन्तु उस समय सारे भक्त जन राम कथा में ऐसे डूब चुके थे कि उन्हे पता ही नहीं था कि आस पास क्या हो रहा है।

पंतजी भी यह बात भली भांति जानते थे कि इस समय सब भक्तों के रंग में भंग डालना अच्छा नहीं, यह तो घोर पाप है, यही सोचते हुए उन्होंने इसे प्रभु लीला समझ कर उस बिच्छू को अपनी धोती के दोनों सिरे मिला कर लपेट लिया और दबे पांव वहां से उठे और बागीचे में ले जाकर उसे चुपके से छोड़ आए। बाबा

जी यह सब दृश्य अपनी आंखों से देख रहे थे, उन्होंने अपने भक्त की ओर देख कर बड़े अंदाज से हंस कर चुपके से कहा :-

"कहो बिच्छू ने काटा तो नहीं"

"जिस के रक्षक सांई बाबा हो, उसे कौन काट सकता है।" पंत जी ने बाबा के चरणों में अपना सिर झुकाया।

तीसरा अध्याय

बाबा साहब की चर्चा तो दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही थी, उनके भक्त जन दूर दूर से आकर उन से ज्ञान प्राप्त करते और दीन दुःखी लोग अपने कष्टों से मुक्त हो जाते थे। सांई बाबा के खुले दरबार से कोई भी खाली नहीं जाता था।

बाबाजी के पूज्य एक अन्य बाबाजी पीर मोहम्मद जिन्हें सब लोग सांई बाबा के साथ-साथ बड़े

बाबाजी कहते थे। सब लोग जानते थे सांई बाबा बड़े बाबा का बहुत ही सम्मान करते हैं, उनकी किसी बात को टालते नहीं। बड़े बाबा की हर आज्ञा के आगे सिर झुका देना वे अपना फर्ज समझते थे।

किन्तु एक बार बड़े बाबा ने खुदा को खुश करने के लिए बकरे की कुर्बानी देने की इच्छा प्रकट की। इस कार्य के लिए जो बकरा कुर्बानी देने के लिए लाया गया, वह काफी बूढ़ा और कमजोर था। जब बड़े बाबा ने सांई बाबा से कहा सांई इस बकरे की कुर्बानी देने के लिए तुम ही आगे आओ। सांई बाबा बड़े बाबा का बहुत सम्मान करते थे, उनकी आज्ञा का पालन न करना तो सब से बड़ा पाप था उनके लिए। परन्तु जैसे ही बाबा ने बूढे और कमजोर बकरे के शरीर की ओर देखा तो तड़प कर रह गए उनकी आत्मा से आवाज़ आई नहीं ... नहीं, यह तो पाप है । किसी बूढे और असहाय जीव की हत्या तो सब से बड़ा गुनाह है। किन्तु एक ओर बड़े बाबा का आदेश था तो दूसरी ओर किसी मजबूर बूढ़े जानवर की जान।

बाबा कुछ क्षणों के लिए प्रभु की याद करने लगे और फिर बहुत धैर्य से अपने बड़े बाबा की ओर देख कर बोले क्षमा कीजिए बड़े बाबा, मैं आपकी इस आज्ञा का पालन नहीं कर सकूंगा। मैं जानता हूं कि आपकी हर आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है और आज तक मैं अपने धर्म का पालन करता रहा हूं, परन्तु आज एक ओर मेरा धर्म है दूसरी ओर एक बेसहारा बेजबान मजबूर बूढ़ा जानवर मेरे सामने खड़ा है। और वह मेरी ओर देख कर दया की भिक्षा मांग रहा है।

यदि मैं किसी को जान दे नहीं सकता तो मुझे जान लेने का भी कोई अधिकार नहीं, इसलिए मैं आपकी आज्ञा का पालन नहीं कर पाऊंगा बड़े बाबा मुझे क्षमा कर देना।

बड़े बाबा ने सांई की आंखों में उन की मन की पीड़ा को तैरते देखा तो अति प्रसन्न हो कर बोले सांई, वास्तव में तुम आज मुझ से महान हो गए हो। मैं स्वयं ही नहीं चाहता था कि इस बकरे की ज़ान लूं

मैं तो केवल तुम्हारी परीक्षा ले रहा था कि तुम कितने बड़े ज्ञानी हो गए। आज तुम्हारी जीत हुई है यह तो सब प्रभु की और आपके आशीर्वाद का फल है बड़े बाबा, वर्ना क्या था। यह सारा दृश्य भक्त जनों ने अपनी आंखों से देखा और कानों से सुना तो सारे मिल कर बाबाजी की जय जयकार करने लगे।

सांई बाबा की जय हो ।
हमारे प्रभु साईं बाबा महान हैं धन्य हैं।
युग युग जिएं हमारे बाबा ।

अध्याय 4

विदेशी यात्री

बाबा जी की शोभा देश से निकल कर विदेशों में भी फैल गई थी। उनकी आत्मिक शक्ति की प्रशंसा का तो कहना ही क्या था, उनकी हर बात से ज्ञान का शहद टपकता था एब बार एक विदेशी यात्री बाबा के

दर्शनों के लिए शिरड़ी में बाबा जी के आश्रम में आए। बाबाजी के कहने पर उन्हें बड़े सम्मान के साथ विशेष स्थान पर ठहराया गया। खाने पीने में कोई कमी न रखी गई।

सुबह उठते ही वह विदेशी बाबा जी के दर्शनों के लिए आया तो उस समय बाबा अपने भक्तों से घिरे हुए थे। विदेशी की यह इच्छा थी कि बाबा सब से पहले उन से भेंट करें, मगर बाबा के दरबार में तो ऐसा कोई नियम नहीं था। उनकी नजरों के सामने तो सारे मानव एक जैसे थे, भक्त तो उन्हें अपनी जान से भी प्रिय थे।

विदेशी से यह सहन न हुआ तो वह क्रोधित सा हो कर वहां से जाने लगा। तो अचानक ही सांई बाबा की नजर उस पर पड़ी, बाबाजी तो सब कुछ जानते थे, उन्होंने जैसे ही उस विदेशी को जाते देखा तो ऊंचे स्वर में बोले देखो मित्र रुक जाओ, हमारे आश्रम से इस तरह से रूठ कर कोई नहीं जाता। हम तुम से अवश्य भेंट करेंगे मगर तुम्हारा नम्बर आने के पश्चात्। नहीं बाबाजी अब हम चलेंगे, हमारा रुकना उचित नहीं।

मगर भक्त आज तुम्हारा जाना भी उचित नहीं। बाबा ने उसे रोकने का प्रयास किया परन्तु वह विदेशी चुपचाप वहां से निकल कर टांगे में बैठ कर चला गया।

बाबा और भक्त जन उस विदेशी को क्रोध से भरे जाते देखते रहे। बाबा ने निराश हो कर कहा यह आदमी कितना पागल है इसे पता नहीं कि इसके साथ कोई दुर्घटना होने वाली है। यात्री तो जा चुका था, क्रोध से भरे यात्री ने तांगे वाले से कहा जरा तेज चलो . . .तेज चलो. . . . और तेज. . . .घोड़ा पूरा तेजी से दौड़ने लगा, और थोड़ी दूर जाने पर सामने से एक साइकिल सवार को आते देखकर घोड़ा बिदक खड़ा हुआ, बस फिर क्या था घोड़ा अंधा धुंध भागने लगा, विदका हुआ घोड़ा पागल हो जाता है। यही हाल उस समय उस घोड़े का था जिसका परिणाम यह निकला कि टांगा उलट गया और विदेशी-यात्री नीचे लुढ़क कर काफी दूर तक टांगे के साथ ही घिसटता चला गया। उसके चोट इतनी गहरी लगी थी कि अस्पताल में भर्ती करना पड़ा।

सांई बाबा की बात अस्पताल में पड़े-पड़े उस विदेशी को याद आई वह अपनी भूल पर स्वयं ही लज्जित हो रहा था, साथ ही कह रहा था । वास्तव में शिरड़ी के सांई बाबा आप महान हैं जैसा मैंने सुना था उस से भी कहीं अधिक महान पाया। यदि मैं आपकी बात मान लेता तो मेरा शरीर इस प्रकार से जख्मी न होता।

अध्याय 5

बाबा जी की शोभा जैसे-जैसे बढ़ रही थी वैसे वैसे उनके भक्तों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी। बाबाजी के चमत्कार ही यह सिद्ध करते थे कि वे धरती पर भगवान का अवतार धारण कर चुके हैं, परन्तु उन्होंने अपने आप को स्वयं भगवान नहीं कहा। वह तो सदा यही कहते थे, मैं भगवान का सेवक हूं जो मानव कल्याण के लिए धरती पर आया हूं, यही उनकी महानता थी जो उनको दिन प्रतिदिन लोकप्रिय बना रही थी।

ऐसे ही उनका एक चमत्कार उस समय देखने

को मिला जब बम्बई के एक सज्जन श्री हरिश्चन्द्र के लड़के को मिरगी जैसा भयंकर रोग लग गया। इस रोग के लिए उन्होंने देशी-विदेशी डाक्टरों से इलाज करवाया मगर यह सब बेकार रहा, कहीं उन का इलाज न हो सका।

घर वाले जवान बेटे की बीमारी के कारण बहुत चिंतित थे। कोई दवाई उस पर असर नहीं कर रही थी, ऐसे दुःख के समय उन्हें विचार आया कि क्यों न एक बार सांई बाबा के पास उस बच्चे को ले जाया जाए। उन के दरबार से कोई भी निराश नहीं लौटता, अब अंतिम आसरा यही हैं।

यही सोचकर हरिश्चन्द्र जी अपने सारे परिवार को साथ ले कर बाबा ज़ी के पास पहुंचे और उनका गुणगान करते हुए उस बच्चे को बाबा जी के चरणों तक ले गए। उनके चरणों में बच्चे को लिटा कर हाथ जोड़े हुए बाबा जी से प्रार्थना करने लगे, कि हे प्रभु हमारे बच्चे को ठीक कर दो हम तो थक गए हैं, हार गए हैं.

. . बहुत दुःखी हैं बाबा . . . . बाबा ने उस बच्चे की ओर बड़े ध्यान से देखा और उस की पीठ पर हाथ फेरते हुए दूर आकाश की ओर देखा परन्तु . . वहाँ तो एक विचित्र घटना घटी लड़का एक दम से बेहोश हो कर पानी से निकाली मछली की भांति तड़पने लगा। उस के मुंह से सफेद रंग की झाग निकलने लगी। लड़के की यह हालत देख कर माता पिता के दिल कांप उठे, डर के मारे उनकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। उन्हें नजर आ रहा था अब उनका बच्चा बच नहीं सकेगा शायद उसका अंतिम समय निकट आ गया है। बस यही सब सोच कर मां बाप रोने लगे। उन्हें इस प्रकार रोते देखकर बाबा ने एक हाथ बच्चे के सिर पर रख कर उन से कहा, देखो रोने-धोने से कभी जीवन नहीं आता जाओ ईश्वर पर भरोसा रखो, इस बच्चे को ले जाओ। मगर बाबा यह तो एक शव के सिवा कुछ नजर नहीं आ रहा अब हम इसे घर या बाहर ले जाकर क्या करेंगे ?

यह हमारा आदेश है इसे मानना ही होगा।

पूजा प्रकाशन, पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

हम जो कहते हैं वही करो आगे का काम हम स्वयं देख लेंगे। बाबा के कहने पर वे लोग टूटे हुए दिल से बच्चे को बाबा के चरणों में से उठा कर घर ले आए, उन्हें यह तो पता चल गया था कि यह बच्चा नहीं बल्कि उस का शव ही वे ले कर जा रहे हैं, सारे रास्ते वे रोते आए। घर आने पर उन्होंने बच्चे को एक चारपाई पर लिटा दिया, दोनों उसके पास बैठ कर रोने लगे थे।

लेकिन अचानक ही थोड़ी देर के पश्चात् वह लड़का अपने आप चारपाई से उठ कर बैठ गया और इधर-उधर देखता हुआ बोलाः-

"सांई बाबा कहां है"

"मेरे सांई बाबा कहां है।"

बेटे को होश में आते और सांई बाबा का नाम लेते देख कर दोनों पति पत्नी बड़े खुश हुए थे. . . दोनों के मुंह से एक साथ निकला जय सांई. . . बाबा. . . जय सांई बाबा ।

आप धन्य हैं. . . आप धन्य हैं. . . आप तो

साक्षत प्रभु का अवतार हैं. . .उस दिन के पश्चात् से बच्चे को कभी मिरगी का दौरा नहीं पड़ा।

अध्याय 6

यह बात तो आम प्रसिद्ध है कि सागर में स्नान करने से सब पवित्र नदियों में स्नान का पुण्य और सारे तीर्थों की यात्रा का फल मिल जाता है।

ठीक इसी प्रकार से जो लोग सदगुरु की शरण में आकर उन पर पूर्ण आस्था प्रकट करते हैं, उन्हें तीन शक्तियों :- ब्रह्मा, विष्णु और महेश'' और परब्रह्म को नमन् करने का श्रेय बहुत जल्द प्राप्त हो जाता है। हमारे सांई बाबा तो अपने भक्तों की हर इच्छा पूरी करने का प्रयास करते थे। वे तो पूरी मानवता को ही सुखी देखना चाहते थे। अपने ज्ञान की शक्ति से धरती पर से पाप के अंधेरों को समाप्त करना चाहते थे, बाबा का आश्रम भले ही मस्जिद के नाम से पुकारा जाता था, परन्तु वह मस्जिद पूरी मानवता का चित्रण करती थी। उस मस्जिद

के द्वार हर उस इन्सान के लिए खुले थे जिसे ईश्वर ने धरती पर भेजा है। इस पवित्र स्थान पर आकर जो लोग बाबा की पूजा करते हैं, उन्हें ऐहिक और आध्यात्मिक दोनों पदार्थों की प्राप्ति होती है, और हम सब अपनी मूल प्रकृति में स्थिरता प्राप्त कर शांति के अधिकारी बन जाते हैं, सांई भक्तों के लिए यह जरूरी है कि वे यदि अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति चाहते हैं तो सच्चे मन से उन की उपासना करें, तो फल उन्हें अवश्य मिलेगा।

आओ देखें बाबा की एक और लीला।

शिरड़ी में रविवार को बड़ा बाजार लगता है इस बाजार में दुकानें लगाने के लिए आस पास के क्षेत्रों से काफी लोग आते हैं। बाजार में आने वाली लोगों की भीड़ का तो कहना ही क्या है, क्योंकि लोगों के मन में यह भावना होती थी कि शिरड़ी में सांई बाबा के दर्शन भी कर लेंगे और बाजार से सामान भी खरीद लेंगे।

यही कारण था कि रविवार के दिन बाबा के आश्रम में इतनी भीड़ रहती थी कि वहां पर जाने से दम घुटने लगता था, लेकिन बाबा के भक्त कहां भीड़ की परवाह करते हैं, उन्हें तो हर हाल में अपने परम गुरु के दर्शन करने होते हैं, भले ही कुछ भी होता रहे।

ऐसा ही एक रविवार था कि बाबा के एक भक्त अण्णा साहिब उनके दर्शन करने वहां आए, तो जैसे ही उन्होंने बाबा के चरणों में अपना सिर झुकाया तो बाबा के पास बैठे उनके परम शिष्य भक्त शामा ने हंस कर कहा देखो आपके कोट की बाजू में कुछ चने के दाने लगे हुए हैं।

लेकिन मैंने तो चने न खरीदे न खाए, यह कहते हुए जैसे ही उस ने अपने कोट का बाजू झाडा तो बहुत से भुने हुए चने गिर पड़े, यह सब देखकर सारे भक्त जन हंसने लगे और आश्चर्य से यह सब रहस्य जानने के लिए बड़े इच्छुक थे कि आखिर यह चने के दाने आए कहां से, जब इस प्राणी ने स्पष्ट शब्दों में

कहा कि मैं तो भूल कर भी कभी चने नही खाता।

बाबाजी बड़ी शांत मुद्रा में इन सबकी ओर देखते हुए बोले-देखो भक्त, तुम्हें चोरी से चने खाने की आदत है, और आज भी तुम बाजार से चने चबाते हुए मेरे पास आए हो, मैं तुम्हारी इन सब आदतों को जानता हूं और तुम लोग यह सब देख कर हैरान क्यों हो?

इस बात पर बाबा के पास बैठे हेमाड पंत बड़े आश्चर्य से बोले-बाबा मैं न तो कभी चने खाता हूं, और न ही मैं आज बाजार गया हूं। फिर मैं चोरी के चने क्यों खाता जबकि मैं खाना खाते समय भी सब से बांट कर खाता हूं।

बाबा फिर हंस कर बोले देखो भक्त तुम्हारा कहना भी सच है परन्तु जब तुम्हारे पास ही कोई न हो, तो तुम क्या कर सकते हो, और हम क्या कर सकते हैं, अच्छा यदि यही बात है तो तुम मुझे यह बात तो बताओ कि क्या भोजन करने से पूर्व तुम्हें मेरी याद आती

है? फिर क्या तुम पहले ही मुझे अर्पण करके भोजन किया करते हो ?

ज्ञान की बात क्या है

इस घटना द्वारा बाबा यह कहना चाहते हैं कि इन्द्रियां मन और बुद्धि द्वारा पदार्थों का रसस्वादन करने से पहले बाबा का नाम स्मरण करो, उनका स्मरण ही अर्पण की एक विधि है, इन्द्रियां विषय पदार्थों की चिंता किए बिना, नहीं रह सकतीं। इन पदार्थों के उपभोग से पूर्व ईश्चार्पण कर देने से उनकी आसक्ति स्वभावतः नष्ट हो जाती है।

इसी प्रकार सारी इच्छाएं क्रोध, काम, लोभ, मोह, अहंकार आदि सब बुराइयों को नष्ट करने के लिए गुरु का ध्यान करना चाहिए। गुरु के ध्यान से ही आप हर बुराई से बच सकते हैं, कोई भी पाप तुम्हारे निकट नहीं आ सकता।

गुरु का ध्यान गुरु की शिक्षा ही सदा आपके साथ देंगे, ज्ञान से बढ़ कर और कोई धन नहीं और कोई

साथी नहीं, इसलिए सदा बुराई से दूर रहो। इस प्रकार के ज्ञान से दैहिक बुद्धि नष्ट हो कर चैतन्य धन में लीन हो जाती है-सत्य बात तो यह है कि गुरु और ईश्वर में कोई भी अंतर नहीं है-और जो लोग गुरु की सेवा करते हैं वही ईश्वर को पा लेते हैं।

इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि गुरु और ईश्वर की याद किए बिना कुछ भी नहीं खाना चाहिए, न ही कोई कार्य आरंभ करना चाहिए।

जिस पर गुरु की कृपा होगी उसी से ईश्वर भी प्रसन्न होगा। गुरु प्रतिमा को सदा अपनी आंखों के सामने रखो, इस से भक्ति और वैराग्य की प्राप्ति शीघ्र होगी।

ध्यान प्रगाढ़ होने से क्षुधा और संसार के अस्तित्व की विस्मृति हो जाएगी और संसारिक विषयों का आकषर्ण स्वतः नष्ट हो कर मन की शांति और जीवन का हर सुख प्राप्त हो जाएगा।

पूजा प्रकाशन, पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

अध्याय 7

सांई बाबा का नाम लेने वालों के लिए किसी भी चीज की कमी नहीं रहती। जो सच्चे मन से उनका स्मरण करते हैं वे जीवन का हर आनन्द प्राप्त करके सुख के झूले झूलते हैं। हर भक्त की इच्छा पूरे करने वाले सांई की महिमा ही बड़ी निराली है।

ऐसे ही एक सांई बाबा के परम भक्त थे दामू अण्णा जो उस क्षेत्र के बहुत बड़े व्यापारी थे परन्तु हर धंधे में फूंक-फूंक कर कदम रखते थे। बाबा जी की सलाह के बिना कोई काम नहीं करते थे। एक बार बम्बई से एक दलाल ने दामू भाई को पत्र लिखा कि इस समय रूई का धंधा बड़े जोरों पर चल रहा है, ऐसे में यदि आप रूई को खरीद लें तो आगे चल कर काफी लाभ होगा।

दामू भाई ने बहुत सोच विचार के पश्चात् बाबाजी की सलाह लेना जरूरी समझा क्योंकि बिना उन के परामर्श के वह कोई काम नहीं करते थे। उस समय

तो लम्बे धंधे की बात थी। दामू भाई की अपनी बुद्धि काम नहीं कर रही थी। बाबा जी के सब से प्रिय शिष्य और निजी सलाहकार शामाजी को एक पत्र लिखकर यह प्रार्थना की कि वे बाबा जी से इस सौदे के बारे में पूछ कर बताएं कि मेरे लिए कैसा रहेगा ।

शामा जी ने बाबा जी के सामने उनके परम भक्त की सारी बात रखी। बाबा बड़े ध्यान से अपने भक्त का पत्र सुनते रहे और फिर बड़े धैर्य से बोले-

मुझे तो ऐसा लगता है कि वह आकाश तक उड़ना चाहता है। उसे जो कुछ भी आज तक प्रभु ने दे रखा है, वह उससे संतुष्ट नहीं, उसकी लालच उसे व्याकुल कर रही है। फिर उस मूर्ख को इस बारे में मुझे लिखने की क्या जरूरत थी लालच के जाल में फंस कर दामू अंधा हो गया है, जब उसके घर में किसी चीज की कमी नहीं फिर वह क्यों इस लालच में फंस रहा है? उसे क्या पता नहीं कि लालच ही प्राणी का सब से बड़ा शत्रु है।

बाबा के बोलने से शामा उन का तात्पर्य समझ गए थे, उन्होंने उसी समय दामू भाई को पत्र लिख दिया कि आप जो सौदा करने जा रहे हैं, वह लालच का गहरा सागर है जिस में आप डूब भी सकते हो। दामू भाई ने शामा का पत्र पढ़ा तो उन्हें बहुत कष्ट हुआ। वह मन ही मन सोचने लगा कि उसने बाबा को पत्र लिखकर ही सब से बड़ी भूल की। भला पत्र द्वारा इतने बड़े सौदे का निर्णय भी कैसे लिया जा सकता है, इस कार्य के लिए तो मुझे स्वयं शिरड़ी जाना चाहिए था। स्वयं ही सांई बाबा का आर्शीवाद प्राप्त करना चाहिए था।

बस यही सोच कर दामू भाई स्वयं शिरड़ी आए और बाबा के दर्शन करके उन से अपने इस रूई के सौदे के बारे में पूछने लगे। बाबा ने साफ शब्दों मे कहा, दामू लालच इन्सान को अंधा कर देता है, लोभ इन्सान का सबसे बड़ा शत्रु है। दामू भाई इस से अधिक बाबा के सामने बोल नहीं सके, केवल बाबा की बातें सुनते रहे, परन्तु मन में उसी रूई के सौदे के बारे में सोचते रहे जिस में उन्हें लाखों का लाभ होने वाला था।

बाबा तो अंतर्यामी थे। दामू के मन में इस समय क्या था, यह सब वे जानते थे। उन्हें पता था दामू लोभ में अंधा हो चुका है, इस समय वह केवल लाखों के लाभ की बात सोचता है हानि की बात तो उसे याद ही नहीं। बाबा की इस प्रकार शांत मुद्रा में देखकर दामू ने एक बार फिर से पूछा "बाबा मुझे कुछ तो बता दो।"

देखो दामू यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास है तो याद रखो मैं इन संसारिक झंझटों में पड़ना नहीं चाहता। धन की बात मेरे जैसे फकीर के लिए क्या अर्थ रखती है। मेरा सारा धन तो ईश्वर ही है, जाओ तुम भी इस समय ईश्वर को याद करो।

दामू समझ गया था बाबा इस समय उस सौदे के पक्ष में नहीं है। इसलिए उसने रूई को खरीदने का विचार मन से त्याग दिया क्योंकि वह बाबा की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं करना चाहता था। दामू के आश्चर्य की उस समय कोई सीमा न रही जब उसने कुछ ही दिनों के पश्चात् रूई का भाव एक दम से टूटते

देखा। बाबा की कृपा से वह लाखों के घाटे से बच गया। वह सांई बाबा के दरबार में फिर से गया और उन का बहुत बहुत धन्यवाद करने लगा। बाबा हंसकर बोले हे भक्त धन्यवाद तो संसार के स्वामी ईश्वर का करो जिस ने मुझे धरती पर इस लिए भेजा है कि मैं सब की भलाई की बात करूं।

कर भला सो हो भला, अंत भले का भला
सांई बाबा की . . . . जय हो।
जय हो बाबा . . . . जय हो . . . .।

अध्याय आठवाँ

एक बार सांई बाबा के सबसे प्रिय शिष्य शामा को सांप ने डस लिया। थोड़ी देर में उनके सारे शरीर में सांप का जहर फैल गया जिसके कारण वे काफी कष्ट महसूस करने लगे। धीरे-धीरे उन्हें यह महसूस होने लगा कि अब उन का अंतिम समय निकट आ गया है, मौत उन की आंखों के सामने नाच रही थी।

कुछ लोगों ने ऐसे अवसर पर यह राय दी कि उन्हें भगवान विठोवा के पास ले जाना चाहिए, परन्तु शामा ने केवल इतना ही कहा। मैं अपने सांई बाबा के पास ही जाऊंगा। यह कहते हुए शामा मस्जिद की ओर भाग खड़े हुए, उनके होंठों पर यही शब्द थे कि-मेरे ईश्वर तो सांई बाबा ही है।

बाबा ने दूर से ही तड़पते हुए आते देख लिया था परन्तु वे कुछ भी कहने की बजाए जोर-जोर से गालियाँ देने लगे। बाबा जी के इस प्रकार से गालियां देते देख कर सभा में बैठे सब लोग हैरान हो कर बाबा के मुंह की ओर देखने लगे, बाबा गालियां देते-देते बीच में बोले, अरे ओ मूर्ख कृतघ्न ब्राह्मण ऊपर मत चढ़। होशियार यदि तुम ने ऐसा किया तो, एक दम रुक कर फिर गरजते हुए बोले हटो दूर हट जाओ, नीचे उतर। सांई बाबा को इस तरह से क्रोधित देख कर शामा उलझन में पड़ गया और निराश हो कर सोचने लगा कि यह मस्जिद ही तो मेरा घर है, जब सांई बाबा ही मुझे यहां से भगा रहे हैं तो मैं अब कहां जाऊँ? किधर जाऊँ.?

निराश सा हो कर शामा वहीं फर्श पर बैठ गया, उसे अपना अंतिम समय निकट आता दिखाई दे रहा था। अब तो मृत्यु करीब आ ही गयी है गुरु जी की शरण में मरने से ही मेरा कल्याण होगा। बाबा ने निराश से शामा को देखा तो उनके मन में दया की भावना पैदा हो गयी। उस समय धैर्य से बोले शामा तुम चिंता मत करो, यह फकीर तुम्हें ठीक करेगा मैं तुम्हारे हृदय की पीड़ा को समझ रहा हूं. . चिंता को छोड़ दो।

चिंता कैसे छोड़ दूं बाबा जब आप ही मुझे भगा रहे हो तो मुझे कौन बचाएगा... अब तो मौत ही मेरा साथ देगी . . मौत. . नहीं शामा . . निराशा की बात मत करो, जाओ इस समय सीधे घर चले जाओ . घर? शामा ने आश्चर्य से बाबा की ओर देखा, ठीक है, घर नहीं जाना चाहते, तो मेरे पास आकर बैठ जाओ ..। मैं अभी तुम्हे ठीक कर दूंगा. . . मगर. . . दूर हटो . . दूर हटो. .। बाबा एक ओर तो आप मुझे दूर भगाते हो दूसरी ओर पास बुलाते हो इसमें सच्च क्या है?

सच्च यह है शामा की दूर हटो हमारा एक मंत्र है जिस प्राणी को रोग मुक्त करना हो, तो हम यही बोलते हैं कि-

"दूर हटो", "दूर भागो"।

शामा, बाबा के पास उनके चरणों में बैठ गया। बाबा ने बड़े प्यार से शामा की पीठ पर हाथ फेरा। थोड़ी ही देर में शामा भला चंगा हो गया।

अध्याय 9

बाबा से प्रार्थना

हे सांई बाबा भक्तों के कल्पतरु हम सब आप को हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हैं, और साथ ही प्रार्थना करते हैं कि आपके अभय चरणों से हमें कभी विस्मृति न हो।

आपके यह पवित्र चरण कभी भी हमारी नजरों से ओझल न हों। हम इस संसार में आकर जब जन्म

मृत्यु के आवागमन के बारे में सोचते हैं, तो बहुत दुखी होते हैं, इसलिए आप हमारा उद्धार कर दो, हमें इस चक्र से मुक्त करो बाबा. . . ।

हमारी यह इन्द्रियां जो विषय पदार्थों की ओर आकर्षित हो रही हैं, उनकी बाह्य प्रवृत्ति से रक्षा करो, हमारी यह इन्द्रियां बर्हिमुखी प्रवृत्ति और चंचल मन पर अंकुश नहीं है तब तक हमें आत्मसाक्षात्कार की भी कोई आशा नहीं है।

हम यह जानते हैं कि यह धन, पुत्र, पुत्रियां माता, पिता, पत्नी, मित्र, बहन, भाई सगे सम्बन्धी अन्त में हमारे किसी काम न आएंगे। हे सांई बाबा उस समय तो हमें आपका ही सहारा होगा। आप ही हमारी नैय्या को पार लगाओगे. . . . हम आपके ही नाम का स्मरण करेंगे, आप ही हमें इस माया जाल से मुक्ति दिलाओगे। हमारे प्रभु आप ही हैं, हमें इतनी शक्ति दो कि हम काम क्रोध, लोभ, मोह से दूर रहें हमारा अहंकार नाश हो जाए। हमें केवल आपके ही नाम का आसरा है, प्रभु इन पाप के काले अंधेरों से हमें बचा लो।

हमें मुक्ति दो। हमें पाप और बुराईयों के विरुद्ध लड़ने की शक्ति दो. . . . शक्ति दो. . . . भक्ति हमारे जीवन का अंग बनी रहे, ऐसी ही कृपा हम पर करो प्रभु।

इस प्रार्थना को लेकर बाबा के सारे भक्त शांति का अनुभव करते हैं। ऐसे ही बाबा के एक परम भक्त दामू अण्णा ने अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि-

मैं एक बार बाबा के चरणों में बैठा था तो उस समय मेरे मन में दो प्रश्न उठे, जिनके कारण मेरा मन बहुत व्याकुल हो गया मैंने बाबा से पूछा ? हे सांई बाबा-क्या जितने लोग आपके दर्शनों के लिए शिरड़ी में आते हैं, क्या उन सबका ही कल्याण हो जाता है? क्या उन सब की मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं ?

बाबा मेरे यह विचार सुन कर पहले तो हंसे फिर आकाश की ओर उंगली उठाते हुए बड़े धैर्य से बोले-हे भक्त तुम जो कह रहे हो वह सत्य है, परन्तु

जरा आत्मा में झांककर देखो। अपनी आंखों पर से काम, क्रोध, लोभ, मोह की पट्टियां उतार कर देखो और इस आम के वृक्ष की ओर देखो जिसमें कितना बौर आया है. . . . यदि यह सारे बौर ही फल बन जाएं तो आमों की गणना करना कठिन हो जाएगा . . .. .परन्तु क्या कभी ऐसा होता है ?

बहुत से बौर इस कारण गिर जाते हैं कि तेज हवा के झटकों को सह नहीं पाते, इनमें से जो फल का रूप धारण करते हैं, उनमें भी कुछ फल आंधी तूफान तेज वर्षा के कारण अथवा पक्षियों का भोजन बनने पर पकने से पहले ही दम तोड़ जाते हैं। बस पकने तक थोड़े से ही फल बच पाते हैं, केवल कुछ फल ही अपना जीवन पूरा कर पाते हैं।

भक्त ने अपना दूसरा प्रश्न यह किया- बाबा यदि आप ने निर्वाण लाभ कर लिया, तो मैं तो बिल्कुल ही निराश्रित हो जाऊंगा, तब मेरा क्या होगा?

तब बाबा हंसते हुए बोले- जब भी जहां भी

जैसे भी तुम मेरा स्मरण करोगे, तो मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगा। जो भी मुझे सच्चे मन से याद करता है, मैं सदा उसके साथ रहता हूं, मैं अपने भक्तों से कभी दूर नहीं जाता।

इस भक्त की यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। एक बार उस के घर में चोरी हो गई, चोर उसकी पत्नी के सारे गहने यहां तक कि शादी का पवित्र मंगल सूत्र भी ले गए। वह भक्त सत्य सांई बाबा के चित्र के आगे बैठ कर खूब जोर जोर से रोते हुए उनसे प्रार्थना करने लगा कि मुझ गरीब पर दया करो . . . . . दया करो प्रभु. . . . नहीं तो मैं भी मारा जाऊंगा।

यह भी बड़ी विचित्र विडम्बना थी कि दूसरे ही दिन सुबह उसका एक मित्र आया और सारे गहने वापस करते हुए बोला- मुझे क्षमा कर देना भाई मैं अज्ञानी बन गया था। लोभ में अंधा होकर मैंने चोरी तो कर ली परन्तु रातभर मुझे बड़े भयंकर सपने आते रहे एक बाबा ने मुझसे कहा- यह सारे जेवर उसी को वापस कर आओ नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश हो जाएगा।

धन्य हो बाबा आप धन्य हो।

पूजा प्रकाशन, पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

अध्याय 10

प्रार्थना

हे प्रभु सांई, हमारी प्रवृत्ति को अंतर्मुखी बना दो सत्य और असत्य का विवेक दो, तथा सांसारिक पदार्थों से आसक्ति दूर कर हमें आत्मानुभूति प्रदान करो। हम अपनी काया और प्राण आपके चरणों में अर्पित करते हैं, हे सांई हमें शक्ति दो हमें अपने चरणों में स्थान दो।

पूर्व जन्म की कथा

एक बार बाबा जी के भक्त खापडे अपनी पत्नी के साथ बाबाजी के दर्शनों के लिए शिरड़ी पधारे। खापड जी एक साधारण व्यक्ति न हो कर एक बहुत बड़े वकील भी थे, इस पर भी वे बाबा जी की सभा में अक्सर मौन ही धारण किए रखते थे। बस वे लोगों को सुनते रहते थे। आम लोगों को तो खापडे जी बहुत कुछ समझाते थे परन्तु शिरड़ी के सांई बाबा के सामने वे कुछ भी न कह सकते थे।

खापडे जी और उनकी पत्नी को बाबा का आश्रम इतना पसंद आया कि उन्होंने चार मास उस आश्रम में रहते हुए व्यतीत किये। खापड़े साहब तो वहां से निकल गये, मगर उनकी पत्नी तो वहीं रहने लगीं उन्होंने कहा आप घर चलो, मैं कुछ दिन और यहां रहूंगी।

खापड़े साहब के जाने के पश्चात् उन की पत्नी को बाबा के प्रवचन सुन कर और भी आनन्द आता। पहली बार उन्हें पता चला कि इन साधुओं की बातों में कितना आनन्द मिलता है। श्रीमती खापड़े हर रोज बाबा की सभा में जाकर उन से ज्ञान की बातें सुनती रहती। वह उस समय तक खाना नही खाती थी जब तक बाबा खाना नही खाते थे।

एक दिन वह बाबा के लिए खाना लेकर जैसे ही उन की सभा में पहुंची उस समय सारे भक्त खाने की तैयारी कर रहे थे। बाबा के लिए हल्वा, पूड़ी, चने, मटर जैसे स्वादिष्ट भोजन श्रीमती खापडे ने अपने हाथों से तैयार किया था। और दिनों तो बाबा जी का खाना

घंटो तक उनकी प्रतीक्षा किया करता था। परन्तु उस दिन जैसे ही श्रीमती खापड़े खाना लेकर आयीं तो उसी समय बाबा जी खाना खाने लग पड़े। उनके परम शिष्य शामा ने यह सब देख कर बड़े आश्चर्य से पूछा, बाबा आज कोई विशेष बात है क्या? आगे तो आप भक्तों के भोजन करने के पश्चात् ही भोजन किया करते थे, परन्तु आज यह सब।

शामा यह भोजन अति स्वादिष्ट है, इसमें कोई संदेह नहीं। मगर मेरे मित्र यह नारी कोई साधारण नहीं। पिछले जन्म में यह नारी एक व्यापारी की मोटी ताजी गाय थी, जो बहुत अधिक दूध देती थी, इसके पश्चात् यह क्षत्रिंय वंश में पैदा हुई इस की शादी एक बहुत बड़े व्यापारी से हो गई . . . . मैं इसे पिछले जन्मों से जानता हूं। अब इस जन्म में यह मेरी पुजारिन बन कर आयी है, इसलिए मैंने इसके हाथों का भोजन ग्रहण किया है।

शामाजी बाबा के मुंह से उस औरत के पिछले जन्मों का हाल सुन कर बड़े हैरान से उनकी ओर देख

रहे थे। थोड़ी देर के पश्चात्, बाबा खाना खाकर अपने आसन पर जा बैठे। श्रीमती खापडे ने बाबा के चरणों मे नमन् प्रणाम किया। बाबा उस नारी पर अति प्रसन्न हुए और मुस्करा कर बोले देवी तुम राजा राम का जप किया करो इससे तुम्हे मानसिक शांति मिलेगी। जीवन का हर सुख प्राप्त होगा। तुम कर्म से देवी हो हर जन्म में तुमने महापुरुषों की सेवा की है, तभी तो हर बार तुम मानव जाति में जन्म लेती हो। इस बार भी तुम संतों की सेवा कर के अपना अगला जन्म सुधार रही हो।

श्रीमती खापड़े बाबा के मुख से यह सब कुछ सुन कर उनके नाम की माला जपने लगी।

अध्याय 11

लाला लक्ष्मीचन्द को ज्ञान प्राप्ति

लाला लक्ष्मीचन्द का सम्पर्क 1910 में सांई बाबा से हुआ। यह भी भाग्य की विडम्बना थी कि लक्ष्मी

चन्द जैसा साधारण व्यक्ति जिस ने कभी अपना कोई गुरु नहीं बनाया था, फिर भी न जाने कैसे और क्यों उसे एक रात सपनें मे एक दाढ़ी वाले बाबा को देखा, जिसने उस के सिर पर हाथ रख कर आर्शीवाद देते हुए कहा-'बेटा! तुम हर समय चिंता में मत रहा करो, तुम्हारी सारी इच्छाएं हम पूर्ण करेंगे, हम पर विश्वास रखोगे तो सदा सुख पाओगे'' लक्ष्मी चन्द ने बाबा के पांव छूए और हाथ जोड़ कर बाबा से बोले! बाबा आप ने मुझे जो वरदान दिया उसके लिए मैं जितना भी धन्यवाद करूं कम है परन्तु।

जैसे ही लक्ष्मीचन्द की आंख खुली तो उसने चारों ओर देखा वहां पर तो कुछ भी नहीं था। इस पर भी उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसके सिर पर अब भी किसी का हाथ रखा हुआ है। वह इधर-उधर काफी देर तक उस दाढ़ी वाले बाबा की तलाश करता रहा। परन्तु वहां तो कुछ भी नहीं था, थोडी देर के पश्चात् उस के पुराने मित्र, दत्तात्रेय जी बड़े मजे से सीटी बजाते

हुए चले आ रहे थे। लक्ष्मी अपने परम मित्र को आते देख कर बड़े प्रसन्न हुए और सुबह सुबह आने का कारण पूछा।

भैया अपने घर पर दास गुणू का कीर्तन हो रहा है, उसी के लिए मैं तुम्हें बुलाने आया हूं, तुम्हें उस कीर्तन में आना होगा। जरूर आऊंगा मित्र, जरूर आऊंगा।

दत्तात्रय के यहां कीर्तन हो रहा था तो लक्ष्मीचन्द जी भी वहां पर पहुंचे। उन्होंने देखा सामने जो चित्र कीर्तन स्थान पर रखा हुआ है उसमें जो दाढ़ी वाला बाबा है, उसे ही तो उसने स्वप्न में देखा है।

यह कौन से बाबा का चित्र है मेरे दोस्त? हमारे परम गुरु सांई बाबा का यह चित्र है, जिन की कृपा से आज मुझे सब कुछ मिला है, उन्हीं की कृपा से मुझे जीवन का हर सुख मिला है। तुम ठीक कहते हो मित्र मैंने भी इसी बाबा को सपने में देखा। उन्होंने ही मुझे कहा था कि तुम्हारी सारी आशाएं पूर्ण होंगी। यह शिरड़ी

के सांई बाबा हैं, जो इनको अपना गुरु मान लेता है वह मन चाहा फल पाता है। भक्तों को चिरकाल से ही इतना अनुभव होता आया है कि जो सदगुरु या अन्य किसी आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में निकलता है, उसकी ईश्वर स्वयं सहायता करते हैं, वही उन्हें शांति मार्ग दिखाते हैं।

तुम ठीक कहते हो मित्र, अब तो मुझे इस सदगुरु के दर्शनों के लिए शिरड़ी जाना ही होगा अभी इसी समय । यह कहते हुए लक्ष्मी चन्द उसी समय शिरड़ी के लिए चल पड़ा। उसने रास्ते में सोचा कि गुरु को अर्पण करने के लिए उसे थोड़े अमरूद ले लेने चाहिए। मगर तेज चलने के कारण वह रास्ते में अमरूद लेना भूल गया, परन्तु जैसे ही वह शिरड़ी के निकट पहुंचा तो उसे अचानक याद आया कि वह अमरूद लाना भूल गया है अब क्या होगा? यहां तो दूर दूर तक कोई अमरूद बेचने वाला नजर नही आता ?

चिंतित सा लक्ष्मी चन्द बेचारा डरा-डरा सा

चला जा रहा था कि अचानक एक औरत उसके सामने आकर बोली-बाबूजी, आपको अमरूद खरीदने हैं। हां . . . तो , लेकिन तुम यह सब। मैं भी सत्य सांई बाबा की भक्त हूं . . . . ले लो. . . .अमरूद. . . .बाबा को अर्पण करो. . . लक्ष्मी चन्द ने अमरूद लेकर सांई बाबा की शरण में जाकर उन्हें भेट कर उनके चरणों में अपना सिर रख दिया, और भर्रायी हुई आवाज में कहने लगे बाबा आप धन्य हैं आप ही मेरे सपने में आर्शीवाद देने आए थे, आज आपके दर्शन करके मेरा मन शांत हो गया, बाबा मुझे एब बार और आर्शीवाद दो। बाबा ने उसे आर्शीवाद दिया। उसी दिन से लक्ष्मी चन्द का भाग्य जाग उठा, वह कुछ दिनों में धनवान बन गया। बाबा की कृपा से उसके सारे बिगड़े काम बन गए।

समाप्त

* * *

पूजा प्रकाशन, पुल कुतब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110 006

आरती श्री सांई बाबा की

आरती श्रीसांई गुरुवर की, परमानन्द सदा सुरवर की ।
जाकी कृपा विपुल सुखकारी, दुःख शोक, संकट भयहारी ।।1।।
शिरड़ी में अवतार रचाया, चमत्कार से तत्व दिखाया ।।2।।
कितने भक्त चरण पर आये, वे सुख-शांति चिन्तन पाये ।।3।।
भाव धरे जो मन में जैसा, पावत अनुभव वो ही वैसा ।।4।।
गुरु की उदी लगावे तन को, समाधान लाभत उस मन को ।।5।।
सांई नाम सदा जो गावें, सो फल जग में शाश्वत पावे ।।6।।
गुरुवासर करि पूजा सेवा, उस पर कृपा करत गुरुदेवा ।।7।।
रामकृष्ण, हनुमान, रूप में, दे दर्शन जानत जो मन में ।।8।।
विविध धर्म के सेवक आते, दर्शन कर इच्छित फल पाते ।।9।।
जै बोलो सांई बाबा की, जै बोलो अवधूत गुरु की ।।10।।
'सांई दास' आरती को गावे, घर में बसि सुख मंगल पावे ।।11।।

पद

सांई रहम नजर करना, बच्चे का पालन करना ।
जाना तुमने जगतत्पसारा, सबही झूठ जमाना।
मैं अन्धा हूं बन्दा आपका, मुझको प्रभु दिखलाना।
दासगणूं कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना।

पद

रहम नजर करो अब मोरे सांई, तुम बिन नहीं मुझे माँ बाप भाई
मैं अन्धा हूँ बन्दा तुम्हारा। मैं ना जानूं, अल्ला
खाली जमाना मैने गंवाया । साथी आखर का किया न कोई इला
अपने मस्जिद का झाडू गनू है। मालिक हमारे तुम बाबा सांई।